७. सम्मेलन अंगों का

– श्रीप्रसाद

परिचय

जन्म : १९३२, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१२
परिचय : बाल साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध्‌ श्रीप्रसाद जी ने संपूर्ण जीवन बाल साहित्य के लिए समर्पित कर दिया । आपने शिशुगीत, बालगीत प्रचुर मात्रा में लिखे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेरे प्रिय शिशुगीत', 'मेरा साथी घोड़ा', 'खिड़की से सूरज', 'आ री कोयल', 'अक्कड़-बक्कड़ का नगर', 'सीखो अक्षर गाओ गीत', 'गाओ गीत पाओ सीख', 'गीत-गीत में पहेलियाँ' (कविता संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में लेखक ने बड़े ही रोचक ढंग से यह स्पष्ट किया है कि शरीर के अंगों में से किसी को निम्न या उच्च नहीं मानना चाहिए । अंगों का आपसी सहयोग ही महत्त्वपूर्ण है । निहितार्थ है कि जिस तरह सभी अंगों के सामंजस्य से ही शरीर का कार्य अच्छे ढंग से होता है उसी तरह समाज के सभी वर्गों के सहयोग से ही इसकी उन्नति संभव है ।

सूत्रधार : सुनो, सज्जनो, सुनो ! एक सम्मेलन होगा ।
यह सम्मेलन है शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का । हाथ, पैर, मुँह, नाक, कान का, सम्मेलन बेढंगों का ।
(शरीर के विभिन्न अंग आते हैं । सूत्रधार फिर कहता है ।)
तो अब सम्मेलन जुटा, आए हैं सब अंग ।
पेट, कान के साथ है, पैर, आँख है संग ।
(दर्शकों से) दर्शक भाइयो, अब आप शांतिपूर्वक शरीर के अंगों का सम्मेलन देखिए। **(वह जाता है ।)**

पैर : हममें से किसी एक को सम्मेलन का अध्यक्ष बनाना चाहिए।

हाथ : अध्यक्ष कोई नहीं होगा । कौन है बड़ा जो अध्यक्ष बने ?

कान : बिना अध्यक्ष के ही सम्मेलन शुरू कीजिए।

पेट : पर यह सम्मेलन हो क्यों रहा है ?

नाक : **(सभी हँसते हैं ।)** अरे, सबको पता है सम्मेलन में हम सब अपने कामों का बखान करेंगे। जिसका काम सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण होगा, वही बड़ा माना जाएगा।

पैर : सबसे पहले हाथ महाशय अपना काम बताएँ ।

हाथ : भाइयो, बात यह है कि मनुष्य के शरीर का मैं सबसे श्रेष्ठ अंग हूँ । अपनी बात कहना अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना है । **(नाचते हुए)**
यह सुंदर-सी सारी दुनिया किसने कहो बनाई ?
बाग, बगीचे, खेत, द्‌वार पर जो दे रहा दिखाई ।

पैर : सभी जगह आदमी पहुँचता पैरों के ही बल पर । देखे गाँव, शहर देखे हैं पैरों से ही चलकर। बिना पैर के चल पाएगा कैसे कोई बोलो ! मुझसे कौन बड़ा है बतलाओ, मुँह खोलो।

आँख : दुनिया की सुंदरता सारी, सुंदर सूरज किरणें प्यारी । जगमग तारे, चंदा मामा बड़े दुलारे । मैं ही तो सब दिखलाती हूँ, जीवन में खुशियाँ लाती हूँ।

कान : क्या मेरी बात कोई नहीं सुनेगा ?

हाथ : क्यों नहीं ? तुम भी अपना गुण बखान लो । आखिर आँख जब अपने को ही बड़ा कहती है तो तुम क्यों पीछे रहो।

कान : सुनो कान की बात, कान से करो न आनाकानी ।
बिना कान के राग-रागिनी किसने है पहचानी ?

बिना मदद के मेरी, संगीत सुनोगे कैसे ?

पैर : अच्छा नाक जी, अब आप अपना काम बताइए ।

नाक : **(नकियाते हुए)** मेरे बिना कोई कुछ सूँघ नहीं सकता । मैं ही खुशबू और बदबू का भेद करती हूँ । इतना ही कहती हूँ कि-नाक न कटने पाए, रखना ध्यान; सिर्फ यही देना है मुझको ज्ञान ।

जीभ : खूब सबने अपनी बड़ाई की । बुराई तो किसी में कुछ है ही नहीं । वाह ! **(थिरककर)**

मगर बताओ बिना जीभ के क्या कोई कुछ बोला ।
जीभ मिली थी, इसीलिए सबने अपना मुँह खोला ।
मगर बोलने के पहले अपनी बातों को तौलो । तो जनाब, जीभ शरीर के सब अंगों में बड़ी है ।

पेट : **(पेट पर हाथ फेरते हुए)** वाह ! भाई वाह ! सबने अपनी अच्छी बड़ाई की । अरे भैया, यह तो देख लेते कि पेट में ही खाना पहुँचता है । उसे पचाने से शरीर को बल मिलता है और उसी बल पर हाथ, पैर, नाक, कान, जीभ सब उछलते हैं । एक दिन मैं खाना न पचाऊँ, तो सब टें बोल जाएँ । समझ गए तुम मेरा काम, मुझे न कहना बुद्धूराम ।

चेहरा : अब तो मैं ही बचा हूँ जी । सबने अपने-अपने काम बता दिए हैं । लेकिन शरीर में जिसकी सुंदरता बखानी जाती है, वह चेहरा ही तो है । इस चेहरे को देख कभी तो-कोई कहता-फूल खिला । सुनो, ध्यान से मेरे भाई, चेहरा ही है चीज बड़ी । चेहरे में है नाक खड़ी । अधिक क्या कहूँ, बिना चेहरे के आदमी अधूरा है ।

नाक : **(नकियाते हुए)** हमने अपने-अपने काम तो बता दिए अपनी बड़ाई भी कर ली लेकिन सबमें बड़ा कौन ठहरा ?

सभी : **(एक साथ)** मैं बड़ा हूँ । मैं बड़ा हूँ । (सभी अंधों में काना राजा बनने की कोशीश कर रहे थे ।)

पेट : भाइयो, आप शांत रहिए । सबमें मैं ही बड़ा लगता हूँ ।

पैर : **(बात काटकर)** चुप रहिए, आप बड़े नहीं हैं । **(सूत्रधार आता है।)**

सूत्रधार : **(दर्शकों से)** और यही था हमारा सम्मेलन अंगों का । सबको धन्यवाद और नमस्कार । अंगों में बड़ा-छोटा कोई नहीं है । अंगों का बड़प्पन आपसी सहयोग में है ।

(परदा गिरता है ।)

—०—

मौलिक सृजन

अपने प्रिय खिलाड़ी के बारे में प्रेरक जानकारी लिखो ।

श्रवणीय

मीरा के पद दूरदर्शन, रेडियो, यू-ट्यूब, सी. डी. पर सुनो ।

संभाषणीय

रंगों का सम्मेलन या फलों का सम्मेलन, इस विषय पर हास्य कहानी प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

किसी नियत विषय पर आयोजित परिचर्चा, भाषण के विशेष उद्धरण, वाक्यों का प्रयोग करते हुए अपना लिखित मत प्रस्तुत करो ।

पठनीय

फलों के औषधीय गुण बताने वाला लेख पढ़ो ।

शब्द वाटिका

बखान = वर्णन
आनाकानी = टालमटोल

मुहावरे/कहावत

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना = स्वयं अपनी प्रशंसा करना
अंधों में काना राजा = मूर्ख मंडली में थोड़ा पढ़ा लिखा विद्‌वान और ज्ञानी माना जाता है

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) लिखो, किसने कहा है :

कथन	किसने कहा
''अध्यक्ष कोई नहीं होगा ।''	---------
''पर यह सम्मेलन हो क्यों रहा है ?''	---------
''चुप रहिए, आप बड़े नहीं हैं ।''	---------
''क्या मेरी बात कोई नहीं सुनेगा ?''	---------

(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. अब आप ------- शरीर के अंगों का सम्मेलन देखिए ! (शांतिपूर्वक, मन लगाकर, चुप बैठकर)
२. दुनिया की सुंदरता सारी, सुंदर ------- किरणें प्यारी । (चाँद, चंद्रमा, सूरज)

भाषा बिंदु

अ) निम्नलिखित वाक्यों के रचनानुसार भेद पहचानकर तथा दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय के सामने ☑ चिह्न लगाओ ।

१) अंगों में बड़ा-छोटा कोई नहीं है ।
१. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

२) हम दोनों के पंख हैं और हम दोनों फूलों का रस चूसती हैं ।
१. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

३) शेर एक जंगली पशु है जो जंगल का राजा कहलाता है ।
१. साधारण वाक्य ☐ मिश्र वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐

आ) अर्थ के अनुसार वाक्यों के भेद लिखकर प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखो ।

उपयोजित लेखन 'दूरदर्शन से लाभ-हानि' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन शरीर के विभिन्न अंगों से संबंधित मुहावरों की अर्थ सहित सूची बनाओ ।

I79U3H